Toppersnotes®

Unleash the topper in you

राजस्थान – पटवार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भाग – 3

राजस्थान का सामान्य अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	1
2	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	12
3	मेवाड़ का इतिहास	16
4	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	32
5	राज्यपाल	44
6	मुख्यमंत्री	49
7	विधान सभा	54
8	उच्च न्यायालय	63
9	राजस्थान लोक सेवा आयोग	67
10	राजस्थान में जिला प्रशासन	71
11	राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग	80
12	राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान	83
13	राजस्थान के लोकायुक्त	86
14	राजस्थान राज्य सूचना आयोग	89
15	लोक नीति	91
16	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	95
17	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	101
18	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	109
19	राजस्थान की चित्रकला	117
20	राजस्थान के हस्तशिल्प	128
21	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	134
22	राजस्थान के मेले और त्योहार	153
23	राजस्थान के प्रसिद्ध लोक गीत	162

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान के लोक नृत्य	174
25	राजस्थान के प्रमुख रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	182
26	राजस्थान का साहित्य	188
27	राजस्थान के संत और लोक देवी - देवता	200
28	पर्यटन	215
29	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	247
30	राजस्थान का भौतिकीय स्वरुप	262
31	नवीनतम संभाग एवं जिला परिदृश्य	265
32	राजस्थान का भौगोलिक विभाजन प्रदेश	282
33	जलवायु	292
34	राजस्थान में वनस्पति (वन)	303
35	जनसंख्या परिदृश्य	308
36	मृदा	311
37	जल संसाधन	315
38	कृषि	337

1 Chapter

राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

राजस्थान के प्राक् और आद्य ऐतिहासिक काल को निम्न प्रकार से कालानुक्रम में विभाजित किया जाता है।

भूवैज्ञानिक अवधि	**समय**	**संस्कृति/ उपकरण**
प्लीस्टोसीन	500000 ई. पू.	**निम्न पुरापाषाण** – हैण्डएक्स, एलुशियन उपकरण
	50000 ई. पू. से 20000 ई. पू.	**मध्य पुरापाषाण** – स्क्रेपर, बोरर, फ्लेक्स
	20000 ई. पू. से 10000 ई. पू.	**उच्च पुरापाषाण** – ब्लेड, ब्यूरिन
होलोसीन	8000 ई. पू. से 2000 ई. पू.	**मध्यपाषाण** – माइक्रोलिथ्स, ब्लेड
	2500 ई. पू. से 1000 ई. पू.	**ताम्रपाषाणिक**, आहड़ संस्कृति, हड़प्पा संस्कृति, गणेश्वर, जोधपुरा
	1000 ई. पू. पश्चात	**प्रारम्भिक लौह युग**, जोधपुरा, नोह आदि

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व- 10000 ईसा पूर्व)

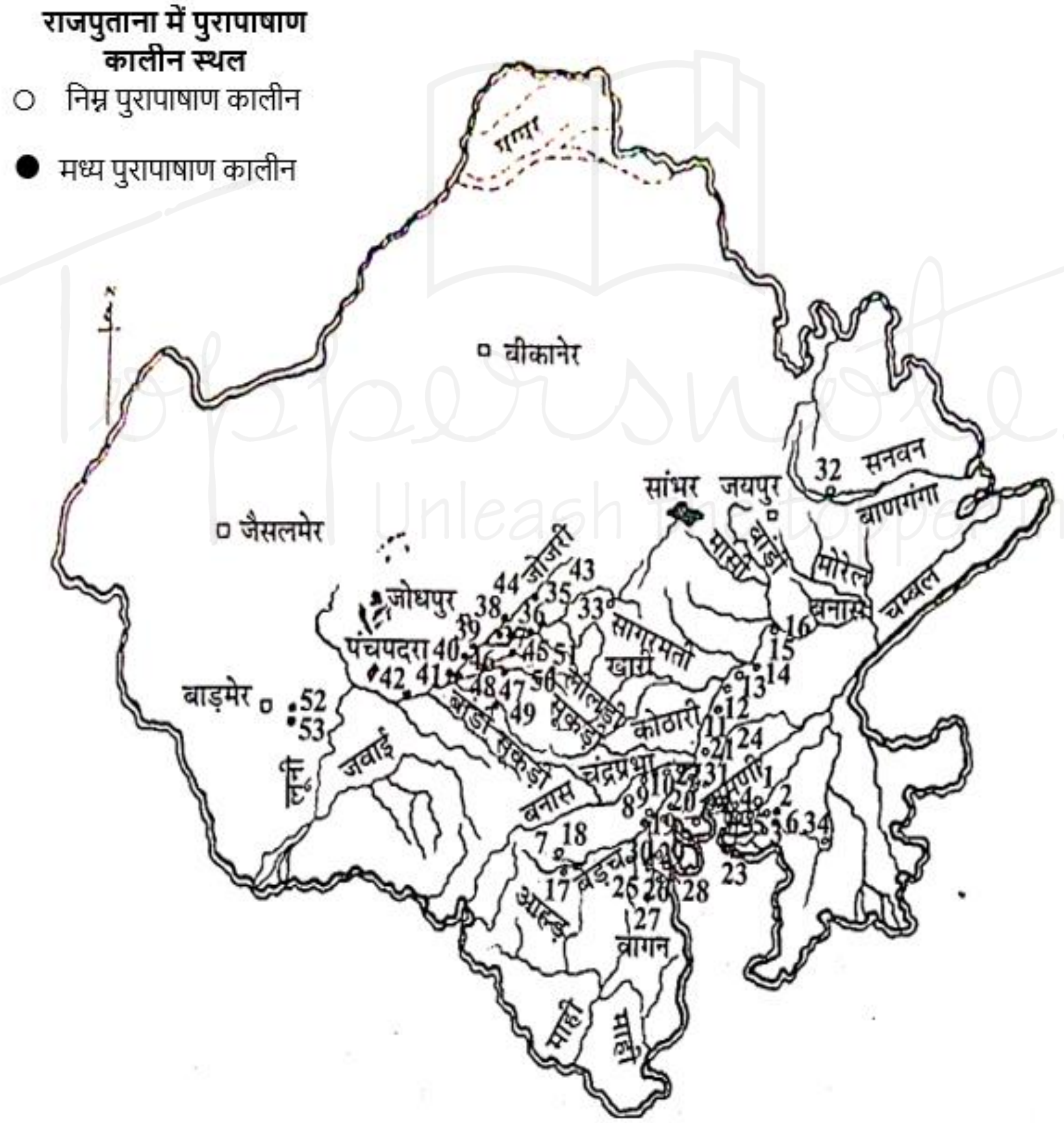

Toppersnotes
Unleash the topper in you

क्रमांकों की कुंजी	
1. भैंसरोड़गढ़	2. नवघाट
3. सोनिता	4. सिंगोली
5. हरिपुरा	6. बाडौली
7. नाथद्वारा	8. हम्मीरगढ़
9. स्वरूपगंज	10. मंडपिया
11. बीगोद	12. जहाजपुर
13. देओली	14. बनथाली
15. महुवा	16. टोंक
17. डबोक	18, खेड़ी
19. चित्तौड़गढ़	20. नगरी
21. संद	22. पारसोली
23. धगदामन	24. सामरिया
25. ब्यावर	26. कल्याणपुरा
27. खोर	28. मोरवण
29. रथजंना	30. सिगोह
31. ताजपुरा	32. भानगढ़
33. गोविंदगढ़	34. गजरौ
35. पिचाक	36. भावी
37. हुण्डगांव	38. गोलियो
39. श्रीकृष्णनपुरा	40. लूनी
41. धुंधारा	42. समदड़ी
43. पीपाड़	44. बिसालपुर
45. भेटान्दा	46. धनवासनी
47. बाण्डी	48. सिंणगारी
49. पाली	50. सोजत
51. धनेरी	52. बरका
53. जूना	

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उसे उपकरण निर्माण की कला का ज्ञान नही था ।
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है-

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में केन्द्रित है।
- **विशिष्ट पाषाण औजार** - हेंडएक्स, फ्लेक्स और क्लीवर।
- औजार बनाने के लिए कच्चा माल - क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट ।
- राजस्थान में प्रारंभिक पाषाण युग के स्थलों की पहचान एचुलियन संस्कृति के रूप में
    - फ्रांसीसी साइट सेंट अचेउल के नाम पर रखा गया है।
    - भारतीय उपमहाद्वीप का पहला प्रभावी उपनिवेश ।
- ऐचुलियन संस्कृति - शिकारी संस्कृति।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।

महत्वपूर्ण तथ्य

- उत्तर-पूर्वी राजस्थान में प्रारम्भिक सर्वेक्षण कार्य जनरल अलेक्सेंडर कनिंगम द्वारा किया गया था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक भी रहे।

महत्वपूर्ण तथ्य

- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी ।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- ऐचुलियन संस्कृति नए उपकरण और प्रौद्योगिकी विकसित करके धीरे-धीरे मध्य पुरापाषाण काल में परिवर्तित हो गई।
- **उपकरण** - साइड स्क्रेपर/ पार्श्व क्षुरणी, एंड स्क्रेपर/ छोर क्षुरणी, पॉइंट्स/ बेधनी, बोरर्स/ बेधक, फ्लेक्स/ शल्क आदि।
    - यहाँ चोपर - चौपिंग (खंडक-गंडासा) उपकरण अनुपस्थित है और हेंडएक्स और क्लीवर दुर्लभ होती हैं।
- **औजार** - छोटे, पतले और हल्के ।
- **कच्चा माल** - चर्ट, क्वार्ट्ज, एगेट, जैस्पर जैसी सिलिकामय शैल।
- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल - लूनी घाटी, पाली और जोधपुर।
    - सोजत और पाली के दक्षिण में कोई निक्षेप नही पाया गया है।
- **अन्य स्थल** - मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, गोलियो, हुंडगाँव, भावी, पिचाक आदि ।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- औजार प्रारंभिक और मध्यकाल की तुलना में अधिक परिष्कृत थे।
- तकनीकों के शोधन और तैयार उपकरण रूपों के मानकीकरण के संबंध में चिह्नित क्षेत्रीय विविधता।
- उत्तर पुरापाषाण काल के औजार मुख्यत: फ्लेक्स और ब्लेड से बने थे ।
- महत्वपूर्ण खोज - राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्के मिले।
    - साक्ष्य हैं कि शुतुरमुर्ग, शुष्क जलवायु के अनुकूल एक पक्षी है।
- बस्तियाँ - जल के स्थायी स्रोतों के पास स्थित होने की एक विशिष्ट प्रवृत्ति।
- समाज छोटे समुदाय जिनमें आमतौर पर 100 से कम लोग होते थे, में विभाजित था ।
    - कुछ हद तक खानाबदोश थे जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।
- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- **राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल** - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनके स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

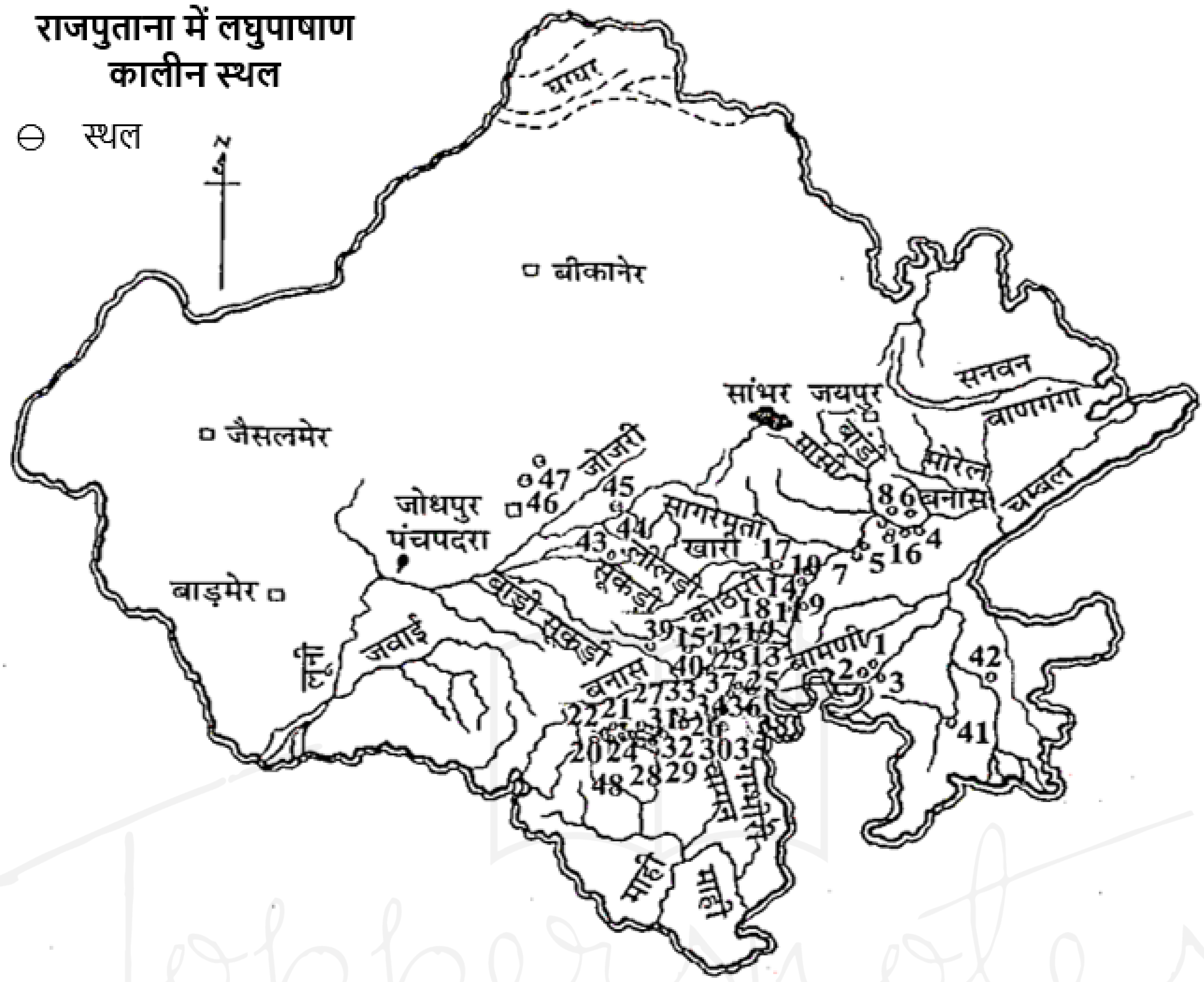

बागोर

- मध्यपाषाणकालीन स्थल
- भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित।
- यह एक बड़े रेत के टीले के रूप में है जिसे महासती कहा जाता है।
- प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल एस लेश्निक द्वारा।
- इस स्थल से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- उद्योग की दृष्टि से भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।

- राजस्थान में इस युग का प्रारंभ लगभग 50000 वर्ष पूर्व होना माना जाता है।
- प्रारंभिक पाषाण काल की संस्कृति से कुछ अधिक विकसित किन्तु इस समय तक मानव को न तो पशुपालन का ज्ञान था और न ही खेती बाड़ी का।
- संस्कृति संगठित सामाजिक जीवन से अभी भी दूर थी।
- छोटे, हलके तथा कुशलतापूर्वक बनाये गए उपकरण प्राप्त।
- नुकीले तथा तीर अथवा भाले की नोक की तरह प्रयुक्त होते थे।
- राजस्थान के 2 क्षेत्रों में मध्य पाषाणकालीन स्थल विशेष रूप से खोजे गए हैं -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- हालाँकि अधिकतम लघुपाषाणोपकरण उपयोग करने वाले मध्यपाषाण स्थल अरावली विभाजन के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में खोजे गए हैं।
  - उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बागौर
- **स्क्रेपर** –
  - 3 x 10 सेमी लम्बा आयताकार तथा गोल औजार।
  - एक अथवा दोनों किनारों पर धार और एक किनारा पकड़ने के काम आता था।
- **पॉइंट**
  - त्रिभुजाकार स्क्रेपर के बराबर लम्बा तथा चौड़ा उपकरण हैं।
  - 'नोक' या 'अस्त्राग्र' के नाम से भी जाना जाता था।
  - प्राप्ति - चित्तौड़ की बेड़च नदी की घाटियों में, लूनी व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में तथा विराटनगर से।

राजस्थान में नवपाषाण काल

- राजस्थान में मानव मध्यपाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया था।
    - इसलिए राजस्थान में नवपाषाण काल की सभ्यता प्राप्त नहीं होती हैं।

नवपाषाण काल की विशेषताएँ

- मानव पशुपालन के साथ-साथ सर्वप्रथम कृषि कार्य करना शुरू कर चुका था।
- **राजस्थान में अवशेष -** बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर) तथा भरणी (टोंक)।
- मानव पहिये से परिचित था और कपास की खेती भी करने लगा था।
- सामाजिक रूप से व्यवसाय के आधार पर जाति व्यवस्था का सूत्रपात।
- मृदभाण्ड कला का उदय तथा कुम्हार के चाक का उदय।
    - चमकदार मृद्भा**ण्ड**, धूसर म मृद्भा**ण्ड** तथा मंद वर्ण मृद्भा**ण्ड**।
- मनुष्य ने वस्त्र निर्माण, गृह निर्माण, पॉलिशिंग प्रणाली का कार्य प्रारंभ किया।
- अग्नि का प्रयोग होने लगा था तथा अग्नि की सहायता से भोजन पकाया जाने लगा।
- मानव का स्थिर ग्राम्य जीवन था।
- लोग पूर्णतः पत्थर से बने औजारों पर निर्भर थे।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

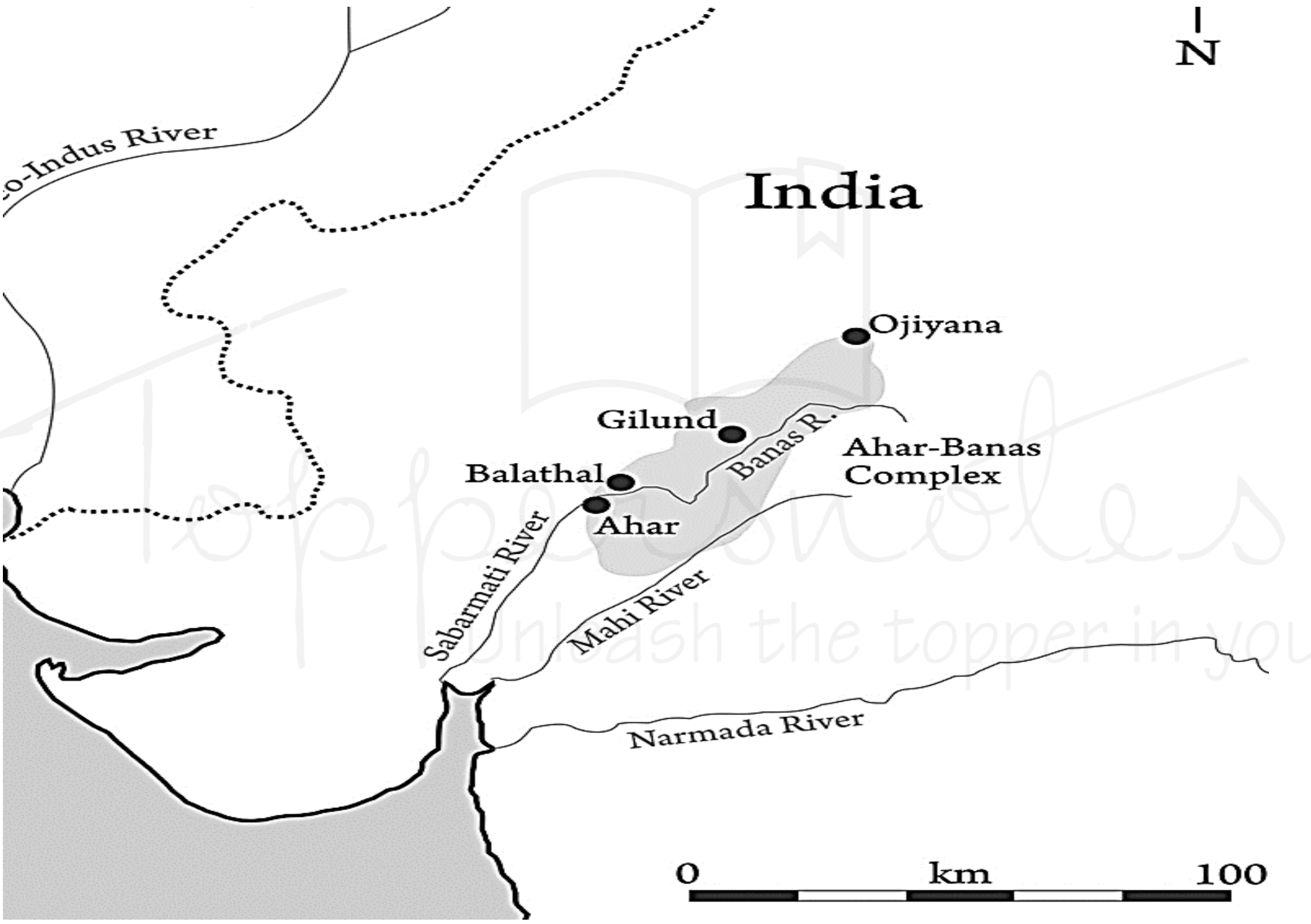

आहड़ सभ्यता (उदयपुर) **Ras Pre 2021/Ras Mains 2018**

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है।
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।
- आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है।
- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में।
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया
- इस संस्कृति में लघु पाषाण उपकरणों का सम्पूर्ण अभाव है।

विशेषताएँ

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
    - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
    - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।

- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भाण्ड का प्रयोग किया जाता था।
  - मृद्भाण्ड **उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- **बनास नदी सभ्यता** का एक **मुख्य हिस्सा**
  - इसलिए इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ
- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड |

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं
- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें • एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

"बनासियन बुल"
- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

धर्मा संस्कृति
- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ**
- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- ईरानी शैली के छोटे **हत्थेदार बर्तन**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**

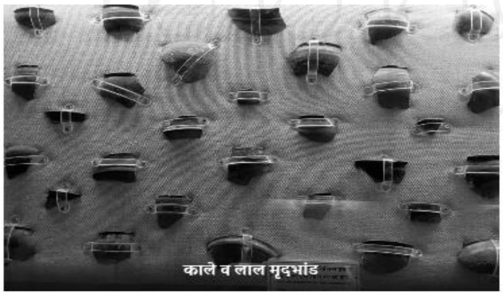
काले व लाल मृदभांड

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	• उत्खनन वर्ष 2015 • उदयपुर में स्थित है। • हड़प्पा के समकालीन है।
गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। • **ग्रामीण** संस्कृति थी। • 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। • **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़
	○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है। • 100×80 आकार के **विशाल भवनों** के अवशेष । • 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त: ○ सादे काले, पालिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित • यह ज्यामितीय अलंकरणों के साथ प्राकृतिक अलंकरण में भी उपलब्ध होते हैं। ○ आहड़ में केवल ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग हुआ हैं।
बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित। • 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया। • **नदी** - बेडच • **खोजकर्ता** - 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा • लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष। ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण। • यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है। • पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है। • **मृद्भाण्ड** ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्भाण्ड मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले। ○ परिष्कृत मृद्भाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं। • **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रधूर मात्रा** में पाये गये । ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई। • **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था। • लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।
ओझियाना सभ्यता	• **भीलवाड़ा** के बदनोर के पास **कोठारी नदी** पर स्थित । ○ आहड़ या बनास संस्कृति का ताम्रपाषाणिक स्थल। • **सफेद बैल** की मृण मूर्तियाँ प्राप्त - **ओझियाना बुल**। • **कालखण्ड** - 2000 ईं. पू. से 1500 ईं. पू. के लगभग । • **उत्खनन** - 1999-2000 में वी आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में । • यह दूसरी नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित है।

गणेश्वर (नीमकाथाना)

- **नीम-का-थाना** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित है।
- **2800 ईसा पूर्व** में विकसित।
- गणेश्वर सभ्यता - "**पुरातत्व का पुष्कर**"।
- ताम्रयुगीन संस्कृति का **प्रचुर भंडार प्राप्त** ।
  - इसीलिए "**ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी**" / **ताम्र संचयी संस्कृति** कहा जाता है।
- **उत्खनन** - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में ।
- **मृद्भांड** - कपीशवर्णी मृद्पात्र।
- **वृहदाकार पत्थर** के बाँध का प्रमाण।
- **मकान पत्थर के** बनाए गए थे।
  - **ईंटो** के उपयोग का कोई **प्रमाण नही** ।
- ताँबे का **बाण** और **मछली** पकड़ने का **काँटा** प्राप्त हुआ।

लाछूरा सभ्यता

- भीलवाड़ा जिले की **आसींद तहसील** में स्थित है।
- **उत्खनन**- 1998-1999 में बी. आर. मीना के निर्देशन में ।
- **अवधि** 700 ई. पू. से 200 ई. तक ।
- **खोजे-**
  - मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ
  - तांबे की चूड़ियाँ
  - मिट्टी की मुहरें (ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित) है।
  - ललितासन में नारी की मृण्मूर्ति

- जोधपुरा सभ्यता में "मानव आवास के चिन्ह फर्श व ईंटों की दीवार के रूप में मिलते है।
- मकान की छतों में टाइल्स का प्रयोग किया गया था।

जोधपुरा सभ्यता

- **कोटपूतली - बहरोड़** में **साबी नदी** के किनारे स्थित ।
- **लौहयुगीन** प्राचीन सभ्यता स्थल
  - लौह धातु का **निष्कर्षण** करने वाली **भट्टियाँ** भी खोजी गई।
- **अवधि** - 2500 ईसा पूर्व से 200 ई.
- **उत्खनन**- 1972-73 में आर .सी. अग्रवाल और विजयी कुमार द्वारा
- **कपिशवर्णी मृद्पात्रों** का भंडार प्राप्त
  - स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भांड संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल
- **घोड़े** का उपयोग **रथ खींचने** हेतु किया जाता था।
- मकान की छतो पर **टाईल्स** एवं **छप्पर छाने** का प्रयोग।
- **मुख्य आहार** - चावल व मांस
- **शुंग** व **कुषाणकालीन सभ्यता**

ताम्रपाषाण कालीन स्थल	
स्थल	**विशेषताएँ**
मेहरगढ़	• तीन संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त - नवपाषाणकालीन, क्वेटा संस्कृति और हड़प्पा कालीन संस्कृति • कपास की खेती का प्राचीनतम साध्य प्राप्त ।
मेढ़ी - पूर्व बलोचिस्तान	• कुल्ली नाल संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल। • ताँबे को गलाकर टिन के निर्माण का साक्ष्य प्राप्त। • दफनाने, दाहसंस्कार एवं कलश शवाधान के साक्ष्य भी प्राप्त ।
आमरी	• पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में स्थित। • चार संस्कृतियों की जानकारी : ○ आमरी संस्कृति ○ हड़प्पा संस्कृति ○ झुकर संस्कृति ○ झांगर संस्कृति
रानाघुन्दई	• पाकिस्तान में गोमलघाटी के झोलारलाई क्षेत्र में स्थित। • खोज: ○ कूबड़दार बैल की मूर्ति ○ सोने की पिन ○ घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं।
कोटदीजी	• प्राप्त सोलह स्तर 2 संस्कृतियों से सम्बद्ध है: ○ ऊपर के तीन स्तर हडप्पा काल से ○ एक संक्रमण काल से ○ नीचे के बारह स्तर हड़प्पा पूर्व काल से
कालीबंगा	• पूर्व हड़प्पा संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति से संबंद्ध ।
मुंडीगाक	• ऊँची दीवार तथा उसके ऊपर धूप में पक्की ईंटों की बुर्ज का साक्ष्य।

अन्य ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ	
संस्कृतियाँ	**विशेषताएँ**
क्वेटा संस्कृति	• गुलाबी रंग लिये सफेद रंग के मृदभांड प्राप्त जिन पर काले रंग से चित्रकारी ।
कुल्ली संस्कृति	• 0
झोब संस्कृति	• पाँच संस्कृतियों के चरणों के संकेत
गैरिक मृद्भांड संस्कृति	• घर सरपट के बने हुए। ○ मिट्टी की लिपाई • फर्श थापी मिट्टी से बने हुए।
काले व लाल मृद्भांड संस्कृति	• 1960 ई. में अंतरजीखेड़ा से काले व लाल मृदभांड संस्कृति का साक्ष्य । • जोधपुरा तथा नोह से भी इस संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त।
ताम्र निधान संस्कृति	• ताम्र संचय का प्रथम साक्ष्य 1822 ई .में कानपुर के समीप बिठुर से प्राप्त। • ताम्र संचय का सबसे बड़ा भंडार - गंगेरिया
चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति	• प्रारंभिक साक्ष्य 1946 ई .में अहिच्छत्र से प्राप्त । • भगवानपुरा, दधरी, नागर तथा कटपालन से चित्रित धूसर मृद्भांड के साक्ष्य। • चित्रित धूसर मृदभांड का सबसे बड़ा स्थल - हरियाणा से प्राप्त बुखारी है।
उत्तर काले पोलिशदार मृद्भांड संस्कृति	• प्रारंभिक साक्ष्य 1930 ई. में तक्षशिला से प्राप्त

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ़) RAS Mains 2018

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
- **सर्वप्रथम खोज** – 1952 ई.
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष।
- **उत्खननकर्ता** - बी.के .थापर व बी.बी लाल द्वारा 1961-69 में ।
- **स्थिति** - राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला
- विश्व का **सर्वप्रथम जोता हुआ खेत** प्राप्त हुआ है।
  - इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
- **2900 ईसा पूर्व** तक यहाँ एक **विकसित नगर** था।
- **लिपि**- सैन्धव लिपि
- **अंत्येष्टि संस्कार**
  - इस संस्कार की 3 विधियाँ थी।
    - पूर्ण समाधिकरण
    - आंशिक समाधिकरण
    - दाह संस्कार
- **कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ**
  - **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
    - साक्ष्य प्रदान करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
    - **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
  - **मुहरें**
    - सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी **मुहरें प्राप्त**
      - **वृषभ** व **अन्य पशुओं** के चित्र
      - **सैन्धव लिपि** में **अंकित लेख** है - अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
  - दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
  - **तौलने के बाट**
    - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।
  - **बर्तन**
    - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
    - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।
  - **आभूषण**
    - **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
    - **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
  - **नगर नियोजन**
    - सूर्य से **तपी हुई ईटों** से बने मकान
    - **दरवाज़े**
    - पाँच से साढ़े पांच मीटर चौड़ी एवं **समकोण पर काटती सड़कें**
    - **कुएँ, नालियाँ** आदि **पूर्व योजना** के अनुसार निर्मित।
    - मोहनजोदडो के विपरीत **घर कच्ची ईंटो** के बने थे।
  - **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
    - **कपास** की **खेती** के अवशेष प्राप्त
    - **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
    - **हल** से अंकित **रेखाएँ** भी प्राप्त जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का **मानव कृषि कार्य** भी करता था।

- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलु या शेहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी।
  - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- छेद किए हुए किवाड़ और सिंध क्षेत्र के बाहर मुद्रा पर **व्याघ्र का अंकन एकमात्र** इसी स्थान से मिले है।
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण
- 2600 ई.पू. में आये "**भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य**" मिला है।

- पुष्टि **बैल** व अन्य पालतू **पशुओं** की **मूर्तियों** से भी होती हैं
    - **बैल** व **बारहसिंघा** की **अस्थियाँ** भी प्राप्त हुई।
    - **बैलगाड़ी** के **खिलौने** प्राप्त हुए।
  - **खिलौने**
    - लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो **बच्चों** के **मनोरंजन** के प्रति **आकर्षण** प्रकट करते हैं।
  - **धर्म संबंधी अवशेष**
    - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से **मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली।**
- **आयताकार** व **अंडाकार अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।
  - यह साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
  - **दुर्ग (किला)**
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** के **अवशेष** भी प्राप्त हुए।
    - मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- हनुमानगढ़ जिले में **सरस्वती नदी / घग्गर नदी** के निकट स्थित हैं।
- **प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन** सभ्यता है।
- **उत्खनन**- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में एक स्वीडिश कंपनी द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया।
- **कुषाणकालीन** व उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई।
- ब्राह्मी लिपि ने नाम से अंकित **2 कांस्य मुहरें** प्राप्त
- मुख्य रूप से **चावल** की **खेती**
- **मकानों** का **निर्माण ईंटो** से हुआ।
- **मृद्भांड** - लाल व गुलाबी रंग के
  - चाक से बने, पतले व चिकने होते थे।
- **गुरु** - शिष्य मृदा मूर्ति मिली।
  - **कुषाण कालीन** सभ्यता के सामान मिले।

बरोर

- गंगानगर में **सरस्वती नदी** के तट पर स्थित।
- **उत्खनन** - 2003 ईमें .।
- **प्राक्, प्रारंभिक** तथा **विकसित हड़प्पा काल** में विभाजित।
- **विशेषता** - मृद्भांडों में **काली मिट्टी** के **प्रयोग** के **प्रमाण** प्राप्त हुए हैं।

- **वर्ष 2006** - मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
- **हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान** जैसे:
    - सुनियोजित नगर व्यवस्था
    - मकान निर्माण में कच्ची इटों का प्रयोग
    - विशिष्ट मृद्भांड परम्परा
- **बटन** के **आकार** की **मुहरे** प्राप्त हुई।

लौहयुगीन संस्कृति

इसे "आदि आर्यों की संस्कृति" के रूप में स्वीकार किया जा चुका है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे **वर्तमान** कोटपुतली बहरोड़ **जयपुर** जिले के विराट नगर में स्थित है।
- **लौहयुगीन** सभ्यता है।
- **प्राचीन नाम**- विराटनगर ।
    - **मत्स्य महाजनपद** की **राजधानी।**
- **खोजकर्ता** - 1837 में कैप्टन बर्ट।
- **उत्खननकर्ता**- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।
- 1837 में **कैप्टन** बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के **प्रथम भाब्रू शिलालेख** की खोज की गई थी।

बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व
तीन पहाड़ियाँ सर्वप्रमुख – पाषाण ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बाँध विहार बाँध चेत्य के अवशेष आहत मुद्राएँ यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं ।

- बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।
- उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्भांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

- **पुरातत्व** के महत्व की **तीन पहाड़ियाँ**:
    - बीज़क डूँगरी
    - भीम डूँगरी
    - महादेव डूँगरी
- **36 मुद्राएँ प्राप्त** - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक तथा यूनानी
- **चमकीले मृद्भांड** वाली संस्कृति
- बौद्ध धर्म के **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- **पूर्णत**: **ग्रामीण** संस्कृति थी।
- भवन निर्माण के लिए **मिट्टी की ईंटो** का **अत्यधिक प्रयोग**।
- माना जाता है कि इसकी **समाप्ति हूण शासक मिहिरकुल** द्वारा की गई।
- महाभारत काल , महाजनपद काल , मौर्य काल , गुप्त काल , हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।

रैढ़ सभ्यता

- टोंक जिले की **निवाई तहसील** में **ढील नदी** के किनारे स्थित।
- **इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर** कहा जाता है।
- **उत्खननकर्ता** - 1938-39 में दयाराम साहनी और उसके बाद डॉ. केदारनाथ पूरी द्वारा।
- **3075 आहत मुद्राएँ** तथा **300 मालव जनपद** के **सिक्के** प्राप्त।
    - यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक **खंडित सिक्का** भी प्राप्त हुआ।
- **मृद्भांड चाक** से **निर्मित** मात्रदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त।
- **विभिन्न आभूषण** - कर्णफूल, हार, पायल आदि।
- **आलीशान इमारतों** के अवशेष।
- **एशिया** का अब तक का **सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार।**

नगर सभ्यता - खेड़ा सभ्यता

- **टोंक** जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है।
- **अन्य नाम** -कर्कोट नगर, मातव नगर।
- **उत्खननकर्ता**- 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा ।
- **खोज**-
    - बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएं प्राप्त ।
    - मृदभांडो के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
    - उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति प्राप्त।
    - मोदक रूप में गणेश का अंकन
    - फणधारी नाग का अंकन
    - कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा
- वर्तमान में **खेडा सभ्यता** के नाम से जाना जाता है।
- लाल रंग के **मृदभाड़** एवं **अनाज** भरने के **कलात्मक मटकों** के **अवशेष** प्राप्त ।

ईसवाल (उदयपुर)

- 5वीं शताब्दी ई.पू. में **लोहा गलाने का उद्योग विकसित** होने के प्रमाण मिले।
    - **प्राचीन औद्योगिक बस्ती** भी कहा जाता है।
- **उत्खनन** -राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के पुरातत्व विभाग के निर्देशन में ।
    - उत्खनन में **ऊँट के दाँत** एवं **हड्डियाँ** मिली।
- **प्राक् ऐतिहासिक** काल से **मध्यकाल** तक का प्रतिनिधित्व करने वाली **मानव बस्ती** के प्रमाण पाँच स्तरों से प्राप्त।
- प्राप्त सिक्कों को **प्रारंभिक कुषाणकालीन** माना जाता है।
- **मकान पत्थरों** से बनाये गए।

नोह (भरतपुर)

- **उत्खनन** - 1963-64 में रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में।
- **अवधि** - 1100 ई.पू. - 900 ई.पू.
- **मृद्भांड** - काले व लाल मृद्भांड संस्कृति

चन्द्रावती (आबू-सिरोही)

- एक "**अनाज ग्रह का कोठार**" प्राप्त हुआ है।

भीनमाल

- **उत्खनन**- 1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल के निर्देशन में ।
- **मृदपात्रों** पर **विदेशी प्रभाव** था।
- खुदाई से मृद्भाण्ड तथा **शक क्षेत्रों** के **सिक्के** प्राप्त हुए हैं ।
- **रोमन ऐम्फोरा/ यूनानी दुहत्थी** सुराही भी प्राप्त हुए हैं।
- ईसा की **प्रथम शताब्दी** एवं **गुप्तकालीन अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- संस्कृत विद्वान **महाकवि माघ** एवं **गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त** का **जन्म स्थान** माना जाता है ।
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने यात्रा की।

जूनाखेड़ा (पाली)

- **खोजकर्ता** - 1883-84 में एच.डब्ल्यू.बी.के. गैरिक द्वारा।
- **मिट्टी के बर्तन** पर **शालभंजिका** का अंकन ।

नगरी सभ्यता/ मध्यमिका

- यह सभ्यता चित्तौडगढ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।
- इस सभ्यता की खोज 1872 ई. में कार्लाइल द्वारा की गई।
- सर्वप्रथम उत्खनन 1904 ई. में डॉ. डी. आर. भण्डारकर द्वारा तथा तत्पश्चात 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ से शिवि जनपद के सिक्के तथा गुप्तकालीन कला के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन नाम में माध्यमिका पतंजलि के महाभाष्य में तथा महाभारत में मिलता है। **RAS Pre 2016**
- नगरी सभ्यता से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।
- नगरी शिवि जनपद की राजधानी रही है।
- नगरी सभ्यता पर कुषाणकालीन स्तर में नगर की सुरक्षा हेतु निर्मित मजबूत दीवार बनाये जाने के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- नगरी सभ्यता से चार चक्राकार कुएँ भी प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान की अन्य प्राचीन सभ्यताएँ

- राजस्थान का **इतिहास संभवत**: पूर्व **पाषाण काल** से **प्रारंभ** है।
- करीब एक लाख वर्ष पहले मनुष्य **मुख्यतः बनास** नदी के किनारे या **अरावली** के **उस पार** की नदियों के किनारे निवास करता था।
- मनुष्य **औजारों** की मदद से **भोजन** की **तलाश** में हमेशा **एक स्थान** से दूसरे स्थान को जाते रहते थे।
    - **नमूने** - बैराठ, रैढ़ और भानगढ़ के आसपास।
- प्राचीनकाल में **उत्तर-पश्चिमी राजस्थान** में वैसा **मरुस्थल नहीं** था जैसा वह आज है।
- पहले **सरस्वती** और **दृषद्वती** जैसी **विशाल नदियाँ** बहा करती थीं।
- नदी घाटियों में हड़प्पा**,** 'ग्रे-वैयर' और **रंगमहल** जैसी **संस्कृतियाँ** फली-फूलीं।
- खुदाइयों से खासकर **कालीबंगा** के पास, पाँच हजार साल पुरानी एक विकसित **नगर सभ्यता** की खोज।

राज्य की प्रमुख संस्कृतियाँ निम्नलिखित हैं

आर्य सभ्यता

- यह एक **ग्रामीण सभ्यता** के रूप में विकसित हुई।
- आर्यवासियों ने **पशुपालन** के साथ **कृषि** को भी अपनाया था।
- राजस्थान में **आर्य** सर्वप्रथम **उत्तर पूर्वी भाग** में आकर बसे।
- **विकास** - 1000-600 ईसा पूर्व ।
- **प्रमाण** – अनूपगढ़ जिला व तरखान वाला डेरा (श्री गंगानगर) से प्राप्त।
- **अधिकांश** मात्रा में **मिट्टी के बर्तन** मिले हैं।
- **महत्वपूर्ण स्थल**- जोधपुरा (जयपुर ग्रामीण), बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़), नोह (भरतपुर), सुनारी (नीमकाथाना)।

बागोर सभ्यता **RAS Mains 2018**

- भीलवाड़ा के निकट **कोठारी नदी** के किनारे स्थित।
- **पाषाणकालीन सभ्यता** स्थल है।
- **उत्खननकर्ता** – 1967-68 में डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस . लेश्निक
- **मुख्य उत्खनन स्थल -** महासतियों का टीला
- "**आदिम संस्कृति का संग्रहालय**" माना जाता है
- **14 प्रकार** की **कृषि** के अवशेष मिले है।
- **मुख्य कार्य** - कृष, पशुपालन व आखेट
    - **कृषि** व **पशुपालन** के **प्राचीनतम** साक्ष्य मिले।
- **पाँच मानव कंकाल प्राप्त -** जो सुनियोजित ढंग से दफ़नाए गये थे।
- **पाषाण** युग की **सर्वाधिक** सामग्री प्राप्त ।
    - **मुख्य उपकरण**- ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, चंद्रिक
    - इसके **अतिरिक्त** तक्षणी, खुरचनी, तथा बेधक भी बड़ी मात्रा में प्राप्त ।
- मानव **संगठित सामाजिक जीवन** से **दूर।**
- **फर्श** बनाने के लिए **पत्थर** लाये गये थे और यहाँ **फूस** के **वातरोधी पर्दे** भी बनाये गये।
- **उद्योग** - बहुत ही छोटी-**छोटी वस्तुओं** का **निर्माण** और **ज्यामितीय प्रारूपों** की दृष्टि से अत्यंत **उन्नत** ।

सुनारी सभ्यता

- नीमकाथाना की **खेतड़ी तहसील** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित।
- **उत्खनन**- 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा।
- **लोहा गलाने** की **प्राचीनतम भट्टियाँ** प्राप्त ।
- स्लेटी रंग के **मृदभांड प्राप्त** ।
    - मौर्यकालीन सभ्यता के **अवशेष** जिनमें **काली पॉलिश** युक्त **मृदपात्र** है।
- मातृदेवी की **मृण्मूतियाँ** तथा **धान संग्रहण** का **कोठा** भी प्राप्त ।
- **शुंग** तथा **कुषाणकालीन अवशेष** भी प्राप्त ।
- **निवासी चावल** का **प्रयोग** करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे।
- लोहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लोहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मुदपात्र भी मिले हैं।

नलियासर सभ्यता

- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **चौहान वंश** से **पूर्व** की **सभ्यता** के प्रमाण प्राप्त हुए।
- ब्राह्मी लिपि में **लिखित** कुछ **मुहरें** प्राप्त हुई।
    - आहत मुद्राएँ, उत्तर इण्डोसेनियन सिक्के, कुषाण शासक हुविस्क, इण्डोग्रीक, यौधेयगण तथा गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के प्राप्त ।
    - 105 कुषाणकालीन सिक्के ।
    - **अवधि** : तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी सदी तक।

कुराड़ा सभ्यता

- **नागौर** में स्थित है।
- **ताम्रयुगीन** सभ्यता स्थल।
- ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त **प्रणालीयुक्त अर्घ्यपत्र** प्राप्त हुआ है।

किराडोत सभ्यता

- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त ।
    - अलग-अलग आकार की **28 चूड़ियों** के 2 सेट पाए गए।

गरड़दा सभ्यता
- **बूँदी** में **स्थित** है।
- **छाजा नदी** के किनारे स्थित है।
- पहली **बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त ।
  - देश में **प्रथम पुरातत्व महत्त्व की पेंटिंग।**

कोटड़ा सभ्यता
- **झालावाड़** में स्थित है।
- **उत्खनन** - 2003 में दीपक शोध संस्थान द्वारा ।
- **अवधि**- 7वीं से 12वीं शताब्दी मध्य के अवशेष ।

मलाह सभ्यता
- भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- अधिक संख्या में **ताँबे** की **तलवारे** एवं **हार्पून प्राप्त।**

कणसव सभ्यता
- **कोटा** में स्थित है।
- मौर्य शासक **धवल** का **738 ई. से संबंधित लेख** प्राप्त।

नैनवा सभ्यता
- **बूँदी** में स्थित है।
- **उत्खनन**- श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- 2000 वर्ष पुरान **महिषासुरमर्दिनी** की **मृण्मूर्ति** प्राप्त।

डडीकर सभ्यता
- **अलवर** में स्थित है।
- पाँच से सात हजार वर्ष पुराने **शैलचित्र प्राप्त** ।

सोंथी सभ्यता
- **बीकानेर** में स्थित है।
- **खोजकर्ता**- अमलानंद घोष (1953 में)।
- **कालीबंगा प्रथम** के नाम से प्रसिद्ध।
- **हड़प्पाकालीन सभ्यता** के **अवशेष** प्राप्त।

बांका सभ्यता
- **भीलवाड़ा** जिले में स्थित है।
- राजस्थान की **प्रथम अलंकृत गुफा** की खोज।

गुरारा सभ्यता
- **गुरारा गाँव श्री माधोपुर तहसील (नीमकाथाना)** जिले में स्थित है।
- **चाँदी** के **2744 पंचमार्क सिक्के** मिले।

बयाना सभ्यता
- **भरतपुर** में स्थित है।
- **प्राचीन नाम** -श्रीपंथ
- गुप्तकालीन सिक्के एवं **नील** की **खेती** के साक्ष्य प्राप्त।

तिलवाड़ा सभ्यता
- बालोतरा जिले में **लूणी नदी** के **किनारे** स्थित है।
- **उत्खनन**: 1967-68 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा ।
  - **उत्खननकर्ता**- डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में।
- एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल है।**
- **अवधि**- 500 ई. पू. से 200 ई. तक।
- **खोज** -
  - उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त ।
  - पाँच आवास स्थलों के अवशेष।
  - एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

काल	स्थल	औज़ार
पुरापाषाण	• डीडवाना (प्राचीनतम स्थल), जायल (नागौर),बैराठ (कोटपुतली – बहरोड़) • भानगढ़ (अलवर), इंद्रगढ़ (कोटा)	हैण्डएक्स क्लीवर चापर चैपिंग
मध्यपाषाण (माइक्रोलिथ)	• बागोर (भीलवाड़ा) • तिलवाड़ा (बाड़मेर) • बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़)	स्क्रेपर प्वाइंट
नवपाषाण	• इस काल में कोई भी सभ्यता या संस्कृति राजस्थान में नहीं मिलती है।	सेल्ट बसूला कुल्हाड़ी
ताम्रपाषाण	• आहड़ (उदयपुर) • गिलुण्ड(राजसमन्द) • कालीबंगा(हनुमानगढ़) • झर (जयपुर ग्रामीण) • बागोर (भीलवाड़ा) • तिलवाड़ा (बाड़मेर) • बालाथल (उदयपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
ताम्रयुगीन	• नीमकाथाना (सीकर) • बेणेश्वर (डूँगरपुर) • नंदलालपुरा • किराड़ोत • चौथवाडी (जयपुर ग्रामीण) • साबणियां • पूंगल (बीकानेर) • बूढा पुष्कर (अजमेर) • कुराड़ा (परबतसर) • पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़) • पलाना (जालौर) • कोल माहौली (सवाई माधोपुर) • मलाह (भरतपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
लौहयुगीन	• नोह (भरतपुर) , बैराठ , जोधपुरा • सांभर (जयपुर) , सुनारी (नीमकाथाना) , रैढ • नगर • नैनवा (टोंक), भीनमाल (जालौर) , नगरी (चित्तौड़गढ़) • चक - 84 • तरखानवाला (गंगानगर)	विविध प्रकार के औज़ार

विभिन्न स्थल और उनके उत्खननकर्ता

स्थल/ सभ्यता	उत्खननकर्ता
इंद्रगढ़ और जयपुर	1870 में सी.ए. हैकेट द्वारा

झालावाड़	1928 में सेटनकार द्वारा
नगरी	डॉ. भंडारकर, सौन्दराजन केन्द्रीय पुरातात्विक विभाग
कुराड़ा	1934 में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा
बैराठ	दयाराम साहनी, नीलरत्न बनर्जी , कैलाशनाथ दीक्षित
रैढ	डॉ. केदारनाथ पूरी, पी.ए. चक्रवर्ती, विजयकुमार
कालीबंगा	अमलानंद घोष, बी.बी. लाल, जे.वी. जोशी, बी.के. थापर
रंगमहल, बड़ोपोल डाबरी	डॉ. हन्नारिक
आहड़	अक्षयकीर्ति व्यास, आर.सी. अग्रवाल, वी.एन. मिश्र, एच.डी. सांकलिया
जोधपुरा	आर.सी. अग्रवाल, विजयकुमार
भीनमाल	आर.सी. अग्रवाल
गिलुण्ड	बी.बी. लाल
नोह	आर.सी. अग्रवाल
बालाथल	वी.एन. मिश्र, वी.एस. सिंह, आर.के. मोहन्त, देव कोठारी
ओझियाना	भारतीय सर्वेक्षण विभाग
गणेश्वर	आर.सी. अग्रवाल
बागोर	वी.एन.मिश्र, एस.एल. लैशानी

ऐतिहासिक खोजें

स्थान	जिला	विवरण
गरदडा	बूँदी	देश की पहली बर्ड-राइडर रॉक पेंटिंग
ईसवाल	उदयपुर	लौह युग की सभ्यता के अवशेष
चंद्रावती	झालावाड	चंद्रभागा नदी के तट पर 11-12वीं शताब्दी के मंदिरों के अवशेष
लोद्रवा	जैसलमेर	पंवार शासकों की राजधानी।
ओला क्षेत्र	जैसलमेर	60000-100000 वर्ष पुराने पाषाण युग की कुल्हाड़ी के अवशेष
रंगमहल	हनुमानगढ़	द्वापर युग के अवशेष
दादाथोरा	बीकानेर	लघु पाषाण युग के अवशेष
ओझियाना	भीलवाड़ा	ताम्र युग की सभ्यता के अवशेष
जाहजपुर	भीलवाड़ा	महाभारत युग की सभ्यता के अवशेष
डडीकर	अलवर	5000-7000 साल पुराने रॉक-पेंटिंग्स के अवशेष
तिपटिया	कोटा	पूर्व-ऐतिहासिक रॉक-पेंटिंग
सुनारी	नीमकाथाना	सबसे पुरानी लोहे की भट्टियाँ

2 Chapter राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति

- **सरस्वती और दषद्वती नदी घाटियों** से सभ्यता का केन्द्र **पूर्व और दक्षिण की ओर** विस्थापित हो गया और **आर्य** इन नदी घाटियों में बस गये।
    - सप्त-सैन्धव प्रदेश क्षेत्र भूरे मृद्भांड वाली **आर्य संस्कृति का प्रमुख केन्द्र** बन गया।
- **अनूपगढ़** से प्राप्त **मृदभाण्डों के टुकड़े** हडप्पा से भिन्न प्रकार के हैं।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** - **महाभारत** तथा **पौराणिक गाथाओं** से प्रमाणित होता है कि **जांगल** (बीकानेर), **मरूकान्तार** (मारवाड़) आदि भागों से **बलराम** और **कृष्ण** गुजरे थे जो आर्यो की **यादव शाखा** से संबंधित थे।
- **हिस्ट्री ऑफ मेडीवल हिन्दू इण्डिया** (सी.वी .वैद्य) - **महाभारत** की शाल्व जाति की बस्तियाँ **भीनमाल** में **सांचौर** और **सिरोही** के आसपास मिलती है।

राजस्थान का प्रारंभिक ऐतिहासिक काल

महाजनपद काल (1000 ईसा पूर्व -300 ईसा पूर्व):

- **वैदिक भारत** का अंत **भाषाई**, **सांस्कृतिक** और **राजनीतिक** परिवर्तनों द्वारा चिह्नित।
- 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक, **राजनीतिक इकाइयाँ** बड़े राज्यों में समेकित हो गईं - **महाजनपद**।
- **महाजनपद युग** - दूसरे शहरीकरण की अवधि।
- **राजस्थान** -आधुनिक राज्य नीचे वर्णित कई महाजनपदों का हिस्सा था:

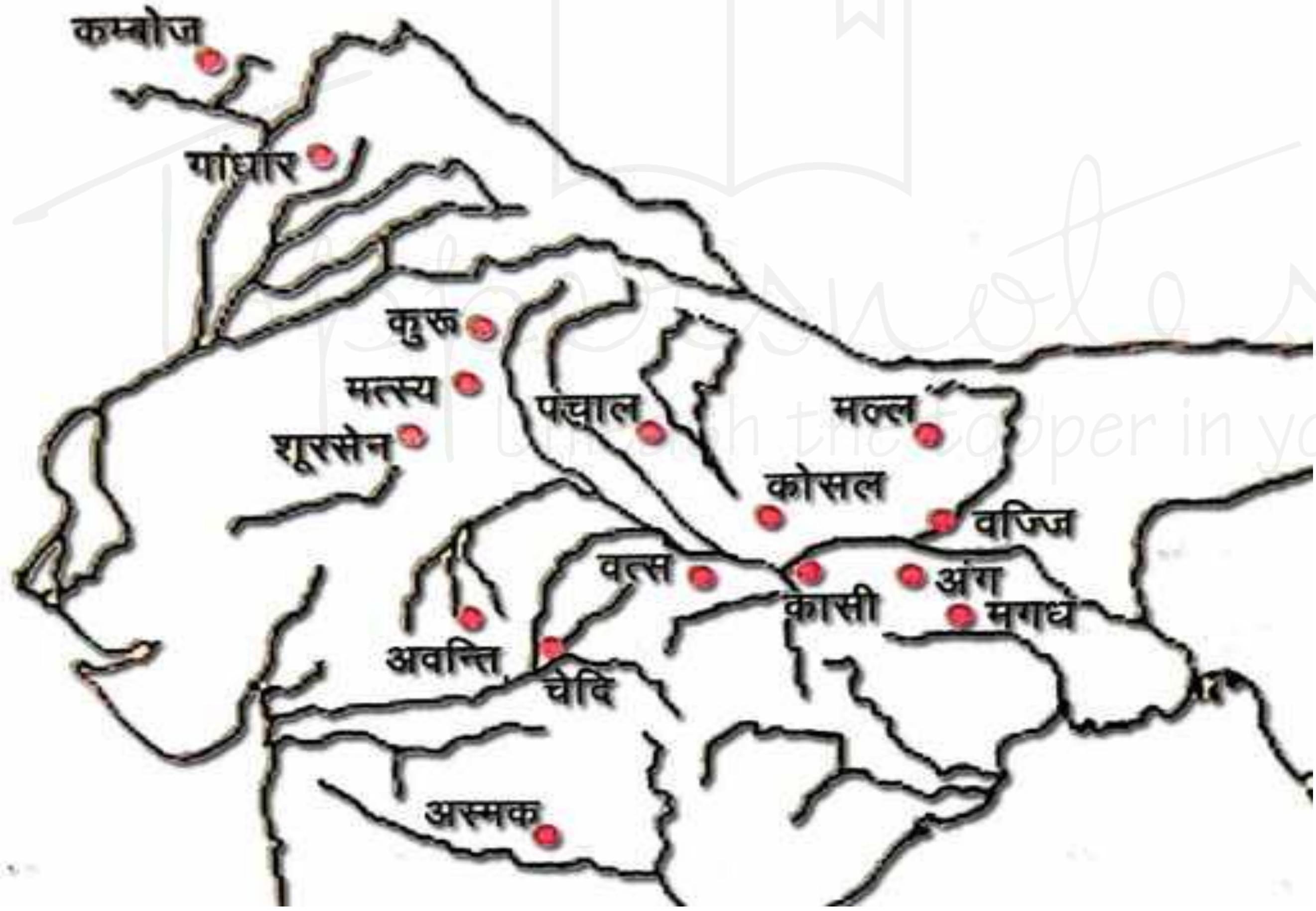

जनपद	विवरण

मच्छा/ मत्स्य महाजनपद	• **जिले** - जयपुर, अलवर और भरतपुर के आधुनिक हिस्से।
	• **राजधानी** - विराटनगर (बैराठ)
	  ○ इसका नाम संस्थापक **राजा विराट** के नाम पर रखा गया ।
	• 5वीं शताब्दी में पड़ौसी **चेदी साम्राज्य** के नियंत्रण में आ गया।
	• **सर्वप्रथम उल्लेख** - ऋग्वेद में
	  ○ **मत्स्य निवासी** - सुदास का क्षत्रु
	• **मीणाओं** का शासन

शूरसेन महाजनपद	• **राजधानी** - मथुरा। • **जिले** - अलवर, भरतपुर, डीग, धौलपुर और करौली। • **यदुवंशी शासको** का शासन ○ **भगवान कृष्ण** से संबंधित
कुरु महाजनपद	• **राजधानी** - इंद्रप्रस्थ। • उत्तरी **अलवर क्षेत्र** का भाग ।
अर्जुनायन जनपद	• **क्षेत्र** : वर्तमान भरतपुर-अलवर • **शुंग काल** (185 - 73 ईसा पूर्व) के दौरान एक **राजनीतिक शक्ति** के रूप में उभरे।
राजन्य जनपद	• वर्तमान **भरतपुर क्षेत्र** में विस्तृत • स्थिति पर विभिन्न मत: ○ **कनिंघम** - मथुरा के निकट ○ **स्मिथ** - पूर्व धौलपुर राज्य राजन्य का मूल घर है। ○ **रैपसन** - उसी क्षेत्र को अर्जुनायण और मथुरा के राजाओं के क्षेत्राधिकार के रूप में वर्णित।
शिवि जनपद	• **क्षेत्र**- माध्यमिका या मज्झिमिका (चित्तौड़)। • **अन्य नाम** - प्राग्वाट , मेदपाट • **राजधानी** - शिवपुर । • **उल्लेख** - पाणिनि के अष्टाध्यायी में।
मालव जनपद	• **क्षेत्र**- टोंक जिला स्थित नगर व् कर्कोटनगर • राजस्थान के जनपदों में सर्वाधिक सिक्के **मालव जनपद** से प्राप्त है। • **राजधानी**- मालवनगर
शाल्व	• **क्षेत्र**- मत्स्य राज्य के उत्तर में अलवर में । • **राजधानी**- मृत्तिकावती
यौद्धेय	• **सिंधु नदी और गंगा नदी** के बीच के क्षेत्र में स्थित। • **क्षेत्र**: वर्तमान गंगानगर और हनुमानगढ़ जिले व बीकानेर के कुछ भाग । • उल्लेख **पाणिनि के अष्टाध्यायी और गणपथ** में मिलता है। • बाद में **गुप्त साम्राज्य** के अधीन

महाभारतकालीन सभ्यता

- **कुरु जांगल** - वर्तमान बीकानेर
- **मद्र जांगल** - जोधपुर
- इस काल में **शाल्व जाति** की बस्तियों का **उल्लेख** मिलता है जो भीनमाल, सांचौर और सिरोही के निकट स्थित थी।

मौर्य युग

- मत्स्य जनपद का भाग **मौर्य शासकों के अधीन** आ गया ।
- **अशोक का भाब्रू शिलालेख** - अति-महत्त्वपूर्ण है।
  - **राजस्थान** में मौर्य शासन तथा **अशोक के बौद्ध** होने की पुष्टि करता है।
- अशोक के उत्तराधिकारी **कुणाल के पुत्र सम्प्रति** द्वारा बनवाये गये मंदिर मौर्य वंश के प्रभाव की पुष्टि करता है।
- **कुमारपाल प्रबंध** तथा अन्य **जैन ग्रन्थ** से पता चलता है कि चित्तौड़ का किला व एक चित्रांग तालाब **मौर्य राजा चित्रांग** द्वारा बनवाया गया था।
- **चित्तौड़** - मानसरोवर तालाब - **मौर्यवंशी राजा मान** का शिलालेख।
- **जी.एच. ओझा**- चित्तौड़ का किला मौर्य वंश के **राजा चित्रांगद** ने बनाया था।
  - 8वीं शताब्दी में **बापा रावल** ने **मौर्य वंश के अंतिम राजा मान** से यह किला छीना था।
- **कोटा के कणसवा गाँव** - **मौर्य राजा धवल** का शिलालेख - राजस्थान में मौर्य राजाओं एवं उनके सामंतों का प्रभाव

विदेशी जातियों का आक्रमण

- मौर्यों के बाद विदेशी जातियों के आक्रमण बढ़ गए।
  - यौधेयों ने राजस्थान से कुषाण सत्ता को ख़त्म किया।
- 150 ई.पू. में यूनानी शासक मिनाण्डर ने मध्यमिका नगरी को अपने अधिकार में कर राज्य की स्थापना की।
- प्रथम शताब्दी ई.पू. में पश्चिमी राजस्थान में सीथियन (कुषाण, पल्लव, शक) आक्रमण आरम्भ हुए।

सिकंदर के आक्रमण के बाद राजस्थान (326 ई.पू.)

- 326 ईसा पूर्व - **सिकंदर** द्वारा **भारत पर आक्रमण**
  - कभी **राजस्थान** नहीं पहुँचा।
  - हालाँकि, आक्रमण ने **भारतीय इतिहास** को गहराई से प्रभावित किया।
- **प्रभाव**
  - कमजोर दक्षिण पंजाब की **गणतांत्रिक जनजातियाँ** - **मालव**, **शिवी और अर्जुनायन** राजस्थान चले आए ।
  - **पंजाब और राजस्थान** - कई कुलीन वर्गों, या आदिवासी गणराज्यों के केंद्र।
- सिक्कों के अनुसार, राजस्थान के **राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण गणराज्य:**

औदंबर, अर्जुनायन, मालव, कुणिंद, त्रिगर्त, अभिरस, यौद्धेय और शिबी (शिवी)।

गुप्तकाल

- **कुषाणों** का पतन → **प्रयाग** और **पाटलिपुत्र** में गुप्तों का आविर्भाव → **समुद्रगुप्त** और **चन्द्रगुप्त द्वितीय** बड़े प्रसिद्ध थे।
- **प्रयाग प्रशस्ति** - समुद्रगुप्त ने **यौद्धेय**, **मालव** एवं **आभीर** जनजातियों को पराजित किया किंतु प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं लाया।
  - उसके स्थान पर **सर्वकर्मदान प्रणाम आज्ञाकरण की नीति** अधिरोपित की।

- बयाना (भरतपुर) से गुप्त शासकों की सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएं (लगभग 2000) मिली हैं।
- इनमें से सर्वाधिक सिक्क्के चंद्रगुप्त द्वितीय के हैं।

- **पश्चिमी भारत** - **शकों** का प्रभाव → **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** ,शक शासक **रूद्र सिंह** को पराजित करता है तथा → पश्चिमी भारत में **गुप्तों का आधिपत्य** स्थापित ।
- गुप्तों का **राजस्थान** में प्रत्यक्ष शासन नहीं
  - परंतु निश्चित रूप से राजस्थान में **गुप्तों का शासन** रहा होगा।
    - **जनजातीय राज्यों** की उपस्थिति ।
- **वरीके वंश**
  - 371 ई. के **विजयगढ़** (बयाना) **प्रस्तर शिलालेख** से विष्णुवर्धन नामक वरीक वंश के राजा का उल्लेख ।
  - **पिता** : यशोवर्धन

- संभवतः **समुद्र गुप्त** के सामंत थे।
- **औलीकर वंश**
  - 423 ई. - **झालावाड़** से एक शिलालेख - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में **औलीकर वंश का शासन** था।
  - लेख में **विष्णु वर्मन नामक शासक** का वर्णन था।
  - इस वंश का संबंध **वर्धन वंश** से भी जोड़ा जाता हैं।

हूणों का आक्रमण

- **गुप्त साम्राज्य** का पतन → **केन्द्रीय शक्ति** का अभाव → गणतंत्रीय जातियाँ **(मालव, यौद्धेय, शिवि)** आपस में लड़कर कमजोर।
- 5वीं शताब्दी का अंत - **हूण राजा तोरमाण** का राजस्थान पर आधिपत्य ।
  - इनके पुत्र **मिहिर कुल** ने विराटनगर के **बौद्ध विहारों** तथा गंगानगर क्षेत्र में **रंगमहल**, **बडोपल, पीर सुल्तान की थड़ी** आदि स्थानों से सभ्यता के चिन्ह नष्ट किये।
  - **बाडोली** (कोटा) - **मिहिर कुल** का बनवाया हुआ शिव मंदिर - जीर्ण-शीर्ण अवस्था में मौजूद है।
- बाद में राजस्थान के राजपूतों से घुल मिल गये और **राजपूतों से विवाह** संबंध भी स्थापित किये।
  - **गुहिल नरेश अल्लट** - हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह।
- **हूण आक्रमण** का अंत - **मालवा के शासक यशोवर्मन** द्वारा
  - लगभग 532 ई. में हूणों को परास्त करने में सफल।
- 9वीं शताब्दी में उत्तर भारत में **पुष्यभूमि शासकों का वर्चस्व** - सम्राट हर्षवर्धन प्रमुख।
  - राजस्थान के अनेक अभिलेखों में **हर्ष संवत्** अंकित - **हर्ष के साम्राज्य का विस्तार** चिन्हित।
- इसके बाद का काल - **राजपूत शक्ति का उदय** काल।

वर्धन वंश

- 7वीं शताब्दी में हर्षवर्धन का काल शुरू हुआ।
  - **राजधानी** - भीनमाल
  - चीनी पर्यटक **ह्वेनसांग ने भीनमाल** का दौरा किया।
- **हर्षवर्धन** के पिता **प्रभाकर वर्धन** ने **गुर्जर शासन** समाप्त किया ।
- पूर्वी राजस्थान के शासक **महासेन गुप्त की बहन के पुत्र प्रभाकर वर्धन** ने **थानेश्वर** से दक्षिणी और पश्चिमी राजस्थान तक के पूरे क्षेत्र पर कब्जा किया ।

राजपूत युग एवं उत्पति सिद्धांत

- **वर्धन वंश के पतन** से लेकर भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना का काल राजपूत काल के नाम से जाना जाता है।
- **राजपूत काल:** 7वी - 12वीं शताब्दी ।
  - **तिथि क्रम** - 650 ई. से 1200 ई. के बीच।
- '**राजपूत**' शब्द भारत में **मुसलमानों के आने के बाद** प्रचलन में आया।
- **प्रमुख राजपूत राजवंश:**
  - मारवाड़ के प्रतिहार और राठौड़
  - मेवाड़ के गुहिल
  - शाकम्बरी के चौहान
  - चित्तौड़ के मौर्य
  - भीनमाल और आबू के चौहान
  - अजमेर के कच्छवाहा
  - जैसलमेर की भाटी

राजपूतों की उत्पत्ति

- सम्राट हर्षवर्धन के बाद **राजस्थान की स्थिति केन्द्रीय सत्ता** के अभाव में विकट हो चली थी ।
  - **विदेशी जातियाँ** (दूसरी शताब्दी ई.पू. से 6ठी शताब्दी) धीरे-धीरे स्थानीय जातियों के साथ सम्मलित होने लगी
- **इनसे एक नई जाति** का जन्म हुआ।
  - **राजनीतिक व्यवस्था** - क्षत्रियों के रूप में ग्रहण
  - इन समूहों के नेता और अनुयायी - **राजपुत्र**।
  - बाद में **राजपूत** कहलाने लगे।
  - **निवास स्थान** - राजपूताना/ राजस्थान
- 13वीं शताब्दी तक राजस्थान के बड़े भाग पर **राजपूतों का वर्चस्व** स्थापित हुआ।
- इनका **भील, मेव, मीणों** आदि से संघर्ष हुआ ।
  - जेता, कोट्या, डूंगरिया भील, मीणों तथा राजपूतों के मध्य संघर्ष के प्रमाण मिले।

अग्निवंशीय मत

- **चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो**- राजपूतों अग्निवंशीय।
  - **वशिष्ठ ऋषि** के यज्ञकुण्ड से राक्षस संहार हेतु **राजपूतों के चारों वंश प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहानों** की उत्पत्ति ।
  - भाओं द्वारा समर्थित
  - बाद में, **नैणसी और सूर्यमल्ल मिश्रण** द्वारा समर्थित ।
- चारों राजपूत वंशों ने **विशुद्धता पुष्टि** के लिये इस मत को अपना लिया।
- अनेक इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं थे।
  - 6 से 16वीं शताब्दी के **अभिलेखों और साहित्यिक ग्रन्थ** - चारों में से **तीन वंश सूर्यवंशी और चंद्रवंशी**।
- **डॉ. दशरथ शर्मा** - भाओं की कल्पना की एक मात्र उपज है।

> - डॉ. ओझा का सूर्य और चंद्रवंशी उत्पत्ति का मत सर्वाधिक मान्य है।

सूर्य और चंद्रवंशीय मत

- **डॉ. ओझा:** राजपूतों की उत्पत्ति सूर्य और चंद्रमा से - **सूर्यवंशीय और चंद्रवंशीय**
- डॉ. दशरथ शर्मा भी इस का समर्थन करते हैं ।
- **आबू शिलालेख** - गुहिल वंशीय राजपूतों की उत्पत्ति रघुकुल से ।
- वंशावली लेखकों ने **राठौड़ों को सूर्यवंशीय** तथा **यादवों, भाटियों और चन्द्रावती के चौहानों को चंद्रवंशीय** बताया है।

वैदिक आर्यों की संतान का मत - सी.वी. वैद्य

ब्राह्मण वंशीय मत - डॉ. डी.आर. भंडारकर, डॉ. गोपीनाथ शर्मा

मिश्रित अवधारणा - देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय

प्राचीन आदिम जातियों गोंड, खोखर, भर आदि के **वंशज** - स्मिथ

> - वैद्य प्रतिहारों को जो गुर्जर कहा गया है वह जाति की संज्ञा से नहीं, वरन उनका गुजरात पर अधिकार होने से कहा गया है।

- इसलिए यह मत उचित नहीं कि राजपूतों की उत्पत्ति गुर्जरों से हुई है।

विदेशी वंश से उत्पत्ति

- शक, कुषाण, हूण आदि विदेशी जातियों की संतान - **इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड** ।
  - **पुस्तक एनल्स एण्ड एन्टीक्वीटिज** - राजपूत शक और सीथियन।
  - **प्रमाण:** राजपूतों की प्रथायें जैसे सती प्रथा, अश्वमेघ यज्ञ, सूर्योपासना, शस्त्रों ओर घोड़ों की पूजा, आदि शकों से मिलती जुलती है।
- गुर्जर मानकर विदेशी वंशीय मत को मान्यता - **डॉ. भण्डारकर**
  - **प्रमाण**: पुराणों में गुर्जर और हूणों का वर्णन विदेशियों के सन्दर्भ में दिया गया है।
- **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** - अग्निवंशीय प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहान भी गुर्जर थे।
  - **प्रमाण:** राजोर अभिलेख में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है।
  - **यू-ची (कुषाण) जाति के वंशज** - ब्रोचगुर्जर ताम्रपत्र के आधार पर कनिंघम

3 Chapter

मेवाड़ का इतिहास

- **मेवाड़** - गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा **राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र**।
- **जिले:** भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ और उदयपुर
- **विस्तार-**
  - **उत्तर पश्चिम:** अरावली से घिरा हुआ।
  - **दक्षिणी क्षेत्र :** पहाड़ी - जंगलों से युक्त ।
- **मूल रूप से मेदपाट** (मेर/ मेद् जाति के अधीन) - समय के साथ भ्रष्ट रूप में मेवाड़ बन गया।
  - **अन्य नाम** - प्रग्वाट, शिवी, मेदपाट
- **संरक्षक देवता:** एकलिंगजी - गुहिलों द्वारा निर्मित 10वीं शताब्दी के सबसे पुराने मंदिरों में से एक।
  - **उदयपुर** के पास स्थित
  - वर्तमान मंदिर पूर्व मंदिर के खंडहरों पर
  - ग्रेनाइट में **शिव की 4 मुखी छवि** के लिए प्रसिद्ध।
- **शिव :** मेवाड़ क्षेत्र के शासक **मेधापथेश्वर** के रूप में जाना जाता है।

मेवाड के महत्वपूर्ण शासक

गुहिल - सिसोदिया वंश

- **आदि पुरुष:** गुहिल/ गुहादत्त (566 ईस्वी)
- **पिता**:शिलादित्य
- **माता:** पुष्पवती
- मुहणौत नैणसी ने गुहिलों की कुल **24 शाखाओं** का वर्णन किया है।

गुहिल के समय का कोई शिलालेख या ताम्रपत्र प्राप्तनहीं हुआ है।

बापा रावल

- बप्पा रावल का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.) में माना जाता है।
- वास्तविक नाम - 'महेन्द्र'
- बापा या बप्पा उनका विरुद था तथा 'रावल' उनका पद था।
- बचपन में **हारीत ऋषि** की गायें चराता था।
  - सेवा से प्रसन्न होकर ऋषि ने **राष्ट्रसेनी देवी से बापा के लिए राज्य** माँगा।
  - देवी ने ऐसा हो का **वरदान** दिया।